IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

मंजू लता
प्रवक्ता (उर्दू)
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

महेन्द्र कुमार सिंह
उप षिक्षा निदेषक एवं प्राचार्य
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

सारांष

विद्यार्थी षिक्षा प्राप्ति हेतु आवासीय अथवा गैर आवासीय विद्यालय में प्रवेष लेता है। षिक्षा बालक का षारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास करते हुए उनको योग्यताआ रूचियों क्षमताओं को वाह्य दिषा की ओर अग्रेशित करती है, प्रस्तुत षोध में आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियां की वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी षैक्षिक उपलब्धि की तुलना जानने हेतु षोध कार्य को कक्षा 8 के 180 विद्यार्थियों पर किया गया। तुलना करने पर कई बिन्दुओं का विष्लेशण किया तथा षोध प्रकिया में वर्णनात्मक विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, एवं षाधार्थी ने जनपद पीलीभीत के 08 ब्लाकों मे से 04 ब्लाकों यादृच्छिक गुच्छ न्यादर्ष विधि से 05 उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं 04 कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय में स्तरीकृत सम्भाव्य न्यादर्ष विधि द्वारा कुल 90–90 विद्यार्थियों का चयन रेंडम विधि द्वारा न्यादर्ष का चयन किया षोधार्थी ने प्रष्नावली का प्रयोग वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि जानने हेतु किया गया स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग करते हुए प्रदत्तों का संकलन प्रदत्तो का विष्लेशण टी परीक्षण द्वारा किया गया। प्राप्त परिणाम से प्रदर्षित हुआ कि कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कूटषब्दावलीः– कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय, व्याकरण।

प्रस्तावना :–

षिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रकिया है मनुश्य इस प्रकिया में अपने उद्भव से अन्त तक धीरे–धीरे निरन्तर ज्ञान, अनुभवों, कौषलों एवं व्यवसायिक दक्षताओ को अपने रूचि योग्यता, वातावरण, सुविधा, आवष्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार सीखता ह, बच्चा जिस परिवेष में रहता

है, वैसा ही सीखता है। भारत एक बहुभाशी राश्ट्र हैं। बहुभाशी देष में प्रत्येक राज्य में निवासरत जनसंख्या अपना कार्य मातृभाशा में सम्पन्न करती है। अतः षिक्षा की प्रारंभिक अवस्था में षिक्षा का माध्यम भी मातृभाशा होना चहिए क्योंकि मातृभाशा का षाब्दिक अर्थ है – मॉ की भाशा। जिसे बालक मॉ के सानिध्य में रहकर सहज रूप से सुनता और सीखता है। जिस भाशा का प्रयोग बच्चा सर्वप्रथम अपनी मॉ से सीखता है और जिसके माध्यम से वह परिवार एवं समुदाय में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। उसे ही प्रारंभिक ज्ञान के लिए माध्यम बनाया जाना आवष्यक है क्योंकि इस अवस्था में उसे विद्यालय में भी परिवारिक वातावरण की आवष्यकता होती है। भाशा षिक्षण का मूल उद्देष्य है– सुनना, बोलना, पढना और लिखना।

इसलिए भाशा से सम्बन्धित इन सभी उपलब्धियों से विद्यार्थियों को परिपूर्ण कराना सभी षिक्षकों का उद्देष्य होना चहिए।

क्योंकि षिक्षा जीवन में बेहतर सम्भावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरबाजे खोलती है, यह आत्म विष्वास को विकसित करती है। व्यक्ति निर्माण में षिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है जो विद्यार्थियों का मार्गदर्षन कर उसकी आन्तरिक प्रतिभाओं का विकास करते हैं। तथा षिक्षक ही आकंलन के आधार पर योजनायें बनाकर, अध्ययन, अध्यापन कार्य को रूचिकर बनाकर षैक्षिक उपलब्धि स्तर को बढाने में सहायता प्रदान करते है।

यह षोध वर्तनी तथा व्याकरण सम्बन्धी है, इस विशय पर प्रकाष डालते है।

- व्याकरण वर्तनी षब्द का अर्थ ह, अनुसरण करना अर्थात पीछे–पीछे चलना भाशा के उच्चारित रूप या बोलने में जो कहा जाता है या उच्चारित किया जाता है उसी के अनुरूप या अनुसार लिखा भी जाता है, इसे ही वर्तनी कहते है।
- भाशा का लिखित रूप वर्तनी की सहायता लेता ह, अतः भाशा के उच्चारित रूप उसी रूप में लिपिबद्ध करना वर्तनी कहलाता है।
- वर्तनी की सहायता से युग–युग्मों से संचित ज्ञान हमें आज भी लिखित रूप से होता है।
- वर्तनी के द्वारा लिपिबद्ध साहित्य और ज्ञान–विज्ञान देष की सीमाओं को भी लांघता है।
- वर्तनी एक ऐसा माध्यम है, जिससे दूरस्थ लोगो मं पत्र और संदेष का आदान प्रदान होता है।

वर्तनी की एक रूपता से भाशा का मानक रूप स्थायी बनता है। वर्तनी की सहायता से भाशा लिखित रूप प्राप्त करती है यदि वर्तनी अषुद्ध हो तो स्वाभाविक है कि भाशा भी अषुद्ध हो जाती है, इससे भाशा की मानकता पर प्रभाव पडता है।

<u>कूटषब्दावली का परिभाशीकरणः–</u>

- कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय– भारत सरकार द्वारा अगस्त 2004 में उच्च प्राथमिक स्तर पर आवासीय विद्यालयों की स्थापना के लिए षुरू किये गये है जिसमें कक्षा–5 में ड्राप आउट अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछडा वर्ग आर अपसंख्यक बालिकाओं का निषुल्क प्रवेष होता है।

- परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय– षासन द्वारा संचालित वह विद्यालय जो कक्षा–6 से 8 तक के विद्यार्थियों को षिक्षा प्रदान करते है।

व्याकरणः– इस विधा के अन्तर्गत बोलचाल एवं साहित्य में प्रयुक्त भाशा का स्वरूप गठन और रूप परिवर्तन का विवेचन किया जाता है।

षोध का उद्देष्य :–

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय एवं परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पना :–

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्याकरण एवं वर्तनी की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

षोध सीमांकनः–

1. प्रस्तुत षोध कार्य पीलीभीत जिले के चार विकास खण्डों में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत षोध कार्य पीलीभीत जिले के चार विकास खण्ड में संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत षोध कार्य केवल कक्षा 8 में पढने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

षोध प्रकिया :–

षोध विधि– इस अध्ययन में वर्णनात्मक विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्ष, चयन विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन में जिला पीलीभीत के 08 विकास खण्ड में से 04 विकास खण्डों का यादृच्छिक गुच्छ संभावित प्रतिचयन विधि से किया गया। तत्पष्चात इन्हीं चार (04) विकास क्षेत्रों के कुल 05 परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा 04 कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों का चयन स्तरीकृत संभावित विधि द्वारा किया गया, इन्हीं विद्यालयो में से 180 विद्यार्थियों का चयन कमबद्ध प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण :–

षोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विष्लेशण :–

प्रस्तुत षोध में सांख्यिकी विष्लशण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट की गणना से की गई।

परिकल्पना :–

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्याकरण एवं वर्तनी की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहो है।

प्रदत्त विष्लेशण व व्याख्याः–

क0स0	विद्यालय	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	ज.मान	परिणाम
1	क.गा.आ.बा. वि.	90	19ण्09	10ण्02	0ण्98	सार्थक अन्तर नही पाया गया
2	उ0.प्रा.वि	90	10ण्01			

उपरोक्त तालिका मे दर्षाये गये विवरणानुसार आवासीय एवं गैर आवासीय दोनों समूहों का मध्यमान कमषः 19.09 एवं 10.01 पाया गया। तथा दोनो समूह का सांख्यिकी गणनानुसार मानक विचलन 10.02 पाया गया एवं ज.मान 0.98 पाया गया। चूकिं क ि;178द्ध से सम्बन्धित 0.05 के सार्थता स्तर पर अंकित मान (1.97) से प्राप्त ज.मान 0.98 कम है।

इस प्रकार दोनो समूहो के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निश्कर्श :–

प्रस्तुत लघुषोध हेतु संकलित आंकडों के सांख्यिकी विष्लेशण से निम्नलिखित निश्कर्श प्राप्त हुए–

- हिन्दी भाशा की पाठ्यपुस्तकों में समावेषित पाठो के प्रति दोनो स्तर के विद्यार्थियो का दृश्टिकोण समान है।
- दोना समूहो के विद्यार्थियों की पढने की आदत एवं षैक्षिक उपलब्धि में सहसंबध मध्यम स्तर का पाया गया। अतः स्पश्ट है कि पढने की आदत होने पर षैक्षिक उपलब्धि मे उन्नति होना सम्भव है।
- बाल पत्रिकाआ के माध्यम से विद्यार्थियों में पढने एवं व्याकरण वर्तनी की समझ विकसित कर सकते ह।

सुझाव :–

विद्यार्थियों को पुस्तकालय म साहित्यिक एवं बाल कथा, पुस्तकों एवं पत्रिकाओं कों उपलब्ध कराते हुए विद्यालय में उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें।

- षिक्षण सहायक सामग्री का नियमित प्रयोग षिक्षक करें

- कक्षा षिक्षण प्रकिया के मध्य में षिक्षक को षब्दो का उचित अर्थ व्यक्त करते रहना चाहिए।

आभारः—

प्रस्तुत षोध अध्ययन को राज्य षैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिशद, लखनऊ, उत्तर प्रदेष की वित्तीय सहायता के माध्यम से श्री दरवेष कुमार वरिश्ठ प्रवक्ता जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलोभीत के मार्गदर्षन में सम्पन्न किया गया है।

सन्दर्भ :—

- डा0 पाण्डेय पृथ्वी नाथ— वृहद सामान्य हिन्दी विद्या प्रकाषन मन्दिर लिमिटेड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
- डा0 बाहरी हरदेव (2022) — हिन्दी षब्द— अर्थ—प्रयोग अभिव्यक्ति प्रकाषन, बी—31 गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद,
- डा0 प्रसाद वासुदेवनन्दन(1959) — आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना भारती भवन पब्लिषर्स एण्ड डिस्टिब्यूटर्स, पटना,
- डा0 राकेष विश्णु दत्त (1991) — आधुनिक हिन्दी लेखन की ऊर्जा पूर्वोदय प्रकाषन,
- डा0 टण्डन पूरनचन्द (1999) — वस्तुनिश्ठ हिन्दी,
- डा0 षर्मा मुनीष — हिन्दी विभाग दिल्ली
- षर्मा भक्त राम (1995) — गॉधीबाद और हिन्दी काव्य, आर्य प्रकाषन मण्डल, दिल्ली
- लाल, पुरूशोत्तम (1992) हिन्दी षिक्षण, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
- लाल रमन विहारी, हिन्दी षिक्षण मेरठः स्तोगी पब्लिकेषन्स
- डा0 जोषी राजीव — हिन्दी वर्तनी की समस्या
- चौधरी नीतू — हिन्दी भाशा सम्बन्धी अषुद्धियॉ, महात्मा ज्योतिबा फुले विष्व विद्यालय, जयपुर (राजस्थान)